



RAJASTHAN

LOWER DIVISION CLERK

लिपिक ग्रेड II/कनिष्ठ सहायक

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग – 1

सामान्य अध्ययन



RAJASTHAN L.D.C.

CONTENTS

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
राजस्थान का भूगोल		
1.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	1
2.	मानसून तंत्र एवं जलवायु	42
3.	अपवाह तंत्र – झीलें, नदियाँ, बांध	49
4.	राजस्थान की वन-संपदा	62
5.	वन्य जीव – जन्तु, वन्य जीव संरक्षण एवं अभयारण्य	72
6.	मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	90
7.	जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता और लिंगानुपात	94
8.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	104
9.	धात्विक एवं अधात्विक खनिज	112
10.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन: परम्परागत एवं गैर-परम्परागत	121
11.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	130
राजस्थान में कृषि एवं आर्थिक विकास		
12.	राजस्थान की प्रमुख फसलें एवं सिंचाई परियोजनाएँ	132
13.	राजस्थान में उद्योग	154
14.	राजस्थान में सूखा, अकाल व मरुस्थलीकरण	158
भारत का भूगोल		
1.	भारत का विस्तार	161
2.	भारत के भौगोलिक भू-भाग	164
3.	भारत का अपवाह तंत्र	170
4.	जैव विविधता	176

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ : कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ	183
2.	राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश, उनकी प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था	189
3.	राजस्थान की स्थापत्य कला : किले, स्मारक एवं ऐतिहासिक स्थल	230
4.	राजस्थान के मेले, त्योहार, लोक कला, लोक संगीत, लोक नाट्य एवं लोक नृत्य	242
5.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत	259
6.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन, प्रमुख संत एवं लोक देवता	261
7.	राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण	276
8.	राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प	280
9.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान	305
10.	राजस्थान में किसान आन्दोलन	310
11.	राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन	316
12.	प्रजामण्डल एवं राजस्थान का एकीकरण	318
अर्थव्यवस्था		
1.	कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र	325
2.	औद्योगिक विकास	328
3.	आधारभूत संरचना का विकास	329
4.	आर्थिक समीक्षा	340

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

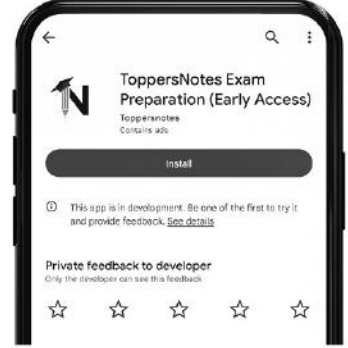
नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे।
ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-



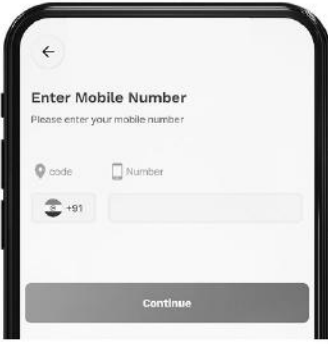
ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।



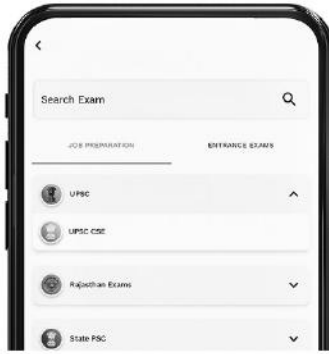
टॉपर्सनोट्स
एजाम प्रिपरेशन ऐप



टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।



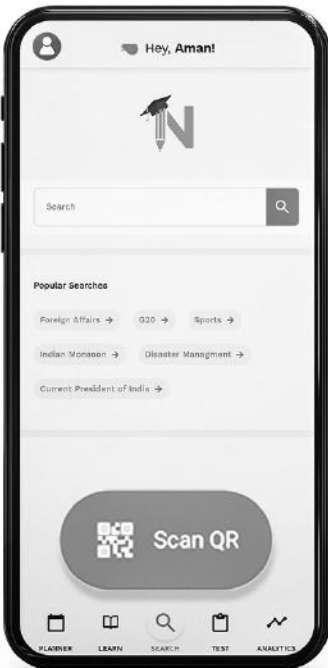
लॉग इन करने के लिए अपना मोबाइल नंबर दर्ज करें।



अपनी परीक्षा श्रेणी चुनें।



सर्च बटन पर क्लिक करें।



SCAN QR पर क्लिक करें।



किताब के QR कोड को स्कैन करें।



• सोल्युशन वीडियो
• डाउट वीडियो
• कॉन्सेप्ट वीडियो



• अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री



• विषयवार अभ्यास
• कमजोर टॉपिक विश्लेषण



• रैंक प्रेडिक्टर
• टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या [766 56 41 122](tel:7665641122) पर whatsapp करें।

राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप

अंगारालैण्ड

पैसिया का उत्तरी भाग जिससे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ है।

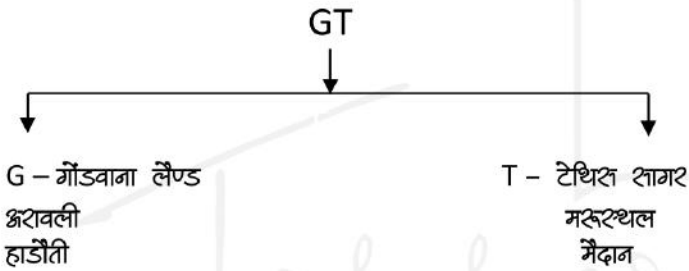
गोंडवानालैण्ड

पैसिया का दक्षिणी भाग जिससे दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है।

टेथिस सागर

यह एक भूखण्डनति है जो अंगारालैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य स्थित है।

Note- राजस्थान का निर्माण



भौगोलिक प्रदेश

अरावली व हाड़ोती भारत के प्रायद्वीप पठार का हिस्सा है जबकि मरुस्थल व मैदानी भाग भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा है।

A- राजस्थान : स्थिति, विस्तार एवं आकार

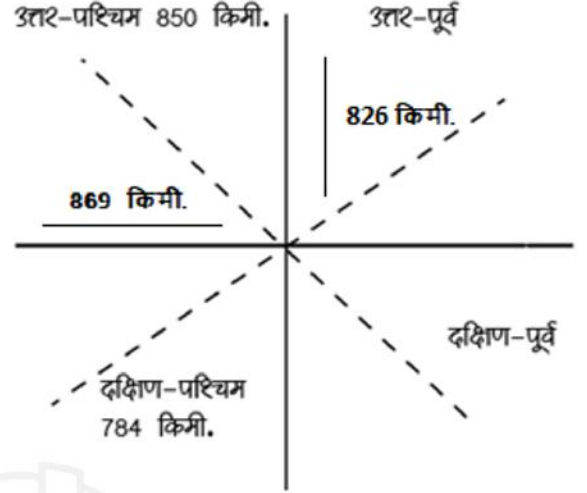
भारत		विश्व	
उत्तर पश्चिम			उत्तर पूर्व

एशिया	
दक्षिण पश्चिम	

- ग्लोबीय स्थिति में राजस्थान उत्तर पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।

B- विस्तार

- अक्षांश - $23^{\circ}03'$ से $30^{\circ}12'$ उत्तरी अक्षांश
- देशांतर - $69^{\circ}30'$ से $78^{\circ}17'$ पूर्वी देशांतर
- क्षेत्रफल - 3,42,239.74 वर्ग किमी.
(1,32,140 वर्ग मील)



C- आकार

Rhombus - T. H. हैडले ने कहा
विषम चतुष्कोणीय (रोम्बस)
पतंगाकार

राजस्थान के क्षेत्रफल संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

1. राजस्थान का क्षेत्रफल 342239.74 वर्ग किमी है।
2. यह भारत के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है।
3. विश्व क्षेत्रफल का राजस्थान 0.25 प्रतिशत धारण करता है।
4. राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है।
5. राजस्थान का सबसे बड़ा जिला जैशल्मेर है। 38401 वर्ग किमी इसका क्षेत्रफल है।
6. जैशल्मेर सम्पूर्ण राजस्थान का 11.22 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है।
7. धौलपुर राजस्थान का सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल 3034 वर्ग किमी है।
8. धौलपुर सम्पूर्ण राज्य का .89 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है।
9. जैशल्मेर धौलपुर से 12.66 गुणा बड़ा है।
10. कर्क रेखा राज्य के डुंगरपुर की सीमा को छूते हुए तथा बांशवाडा के मध्य से होकर गुजरती है।
11. कर्क रेखा की लम्बाई राज्य में 26 किमी है।
12. कर्क रेखा पर सबसे लम्बा दिन 13 घंटे 27 मिनट का होता है जो 21 जून को होता है। यह कर्क सर्वाधिक कहलाता है।
13. राज्य में पूर्व से पश्चिम समय अंतराल 35 मिनट 8 सेकेंड का है।
14. राज्य का मध्य गांव गगराना नागौर है।

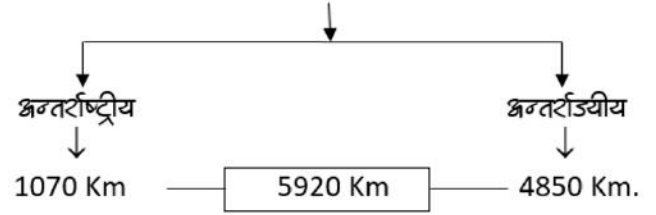
प्रमुख देश	राजस्थान का क्षेत्रफल (बड़ा)
जर्मनी	- बराबर
जापान	- बराबर
ब्रिटेन	- दोगुना
श्रीलंका	- 5 गुना
इजराइल	- 17 गुना

राजस्थान के क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़े एवं सबसे छोटे जिले

बड़े व छोटे जिले

जैशल्मेर (38401 km ²)	धौलपुर (3034 km ²)
बाडमेर (28387 km ²)	दौसा (3432 km ²)
बीकानेर (27244 km ²)	डूंगरपुर (3770 km ²)
जोधपुर (22850 km ²)	राजसमन्द (3860 km ²)
नागौर (17718 km ²)	शवाईमाधोपुर(4498 km ²)

(c) राजस्थान की सीमा:-



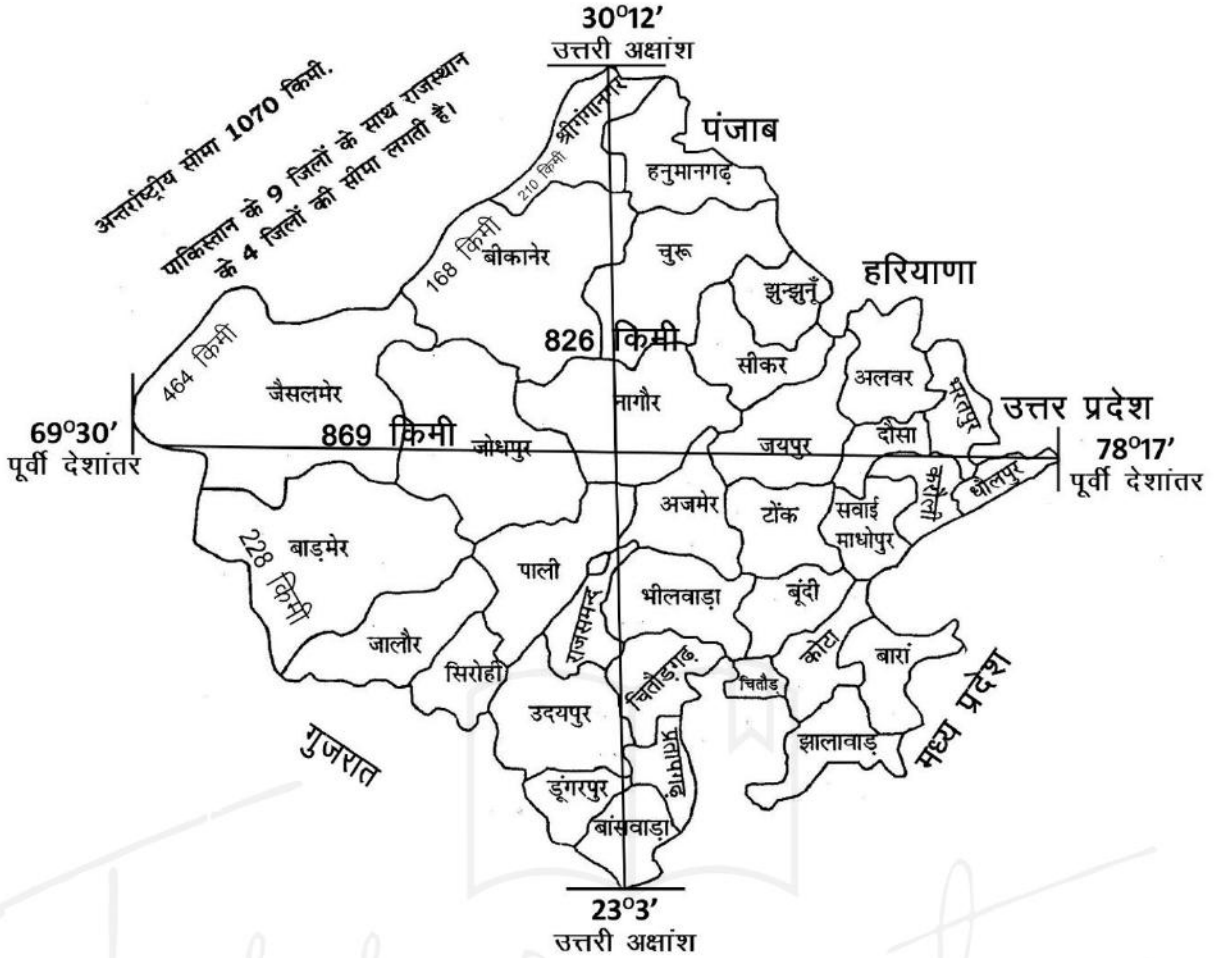
अन्तर्राज्यीय सीमा एवं उन पर स्थित जिले
सीमा- 4850 किमी.

पड़ोसी राज्य	उनकी सीमा पर राजस्थान के जिले
पंजाब (89 किमी.)	हनुमानगढ़, गंगानगर
हरियाणा (1262 किमी.)	जयपुर, भरतपुर, हनुमानगढ़, सीकर, बुरु, झुंझुनु, अलवर
उत्तरप्रदेश (877 किमी.)	भरतपुर, धौलपुर
मध्यप्रदेश (1600 किमी.)	धौलपुर, करौली, शवाई माधोपुर, भीलवाडा, कोटा, बांशवाडा, बांश, झालावाडा, प्रतापगढ़, चित्तौडगढ़
गुजरात (1022 किमी.)	बाडमेर, जालौर, शिरोही, उदयपुर, डुंगरपुर, बांशवाडा

- भारत के मानचित्र में निरपेक्ष स्थिति उत्तर-पश्चिम में है।
- भारत में किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति - नागपुर (महाराष्ट्र) से ज्ञात की जाती है।
- राजस्थान में किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति मेडता (नागौर) से ज्ञात की जाती है।

सूर्य की किरणों की निरपेक्ष स्थिति

- सूर्य की सर्वाधिक सीधी किरणों वाला जिला - बांशवाडा (21 जून)
- सर्वाधिक तिरछी किरणों वाला जिला - श्री गंगानगर (22 दिसम्बर)
- रात व दिन की अवधि बराबर - 21 मार्च, 23 सितम्बर
- सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त - शिलाना (धौलपुर)
- सबसे अन्त में सूर्योदय व सूर्यास्त - कटरा गाँव (शम, जैशल्मेर)



नोट -

(1) राजस्थान के वे जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैं:-

- हनुमानगढ़ - पंजाब हरियाणा
- भरतपुर - हरियाणा + U.P.
- धौलपुर - U.P. + M.P.
- बाँसवाड़ा - M.P + गुजरात

(2) कोटा व चित्तौड़गढ़:- राजस्थान के वे जिले हैं जो एक राज्य (M.P.) से दो बार सीमा बनाते हैं ।

(3) कोटा :- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है व अविच्छिन्न है ।

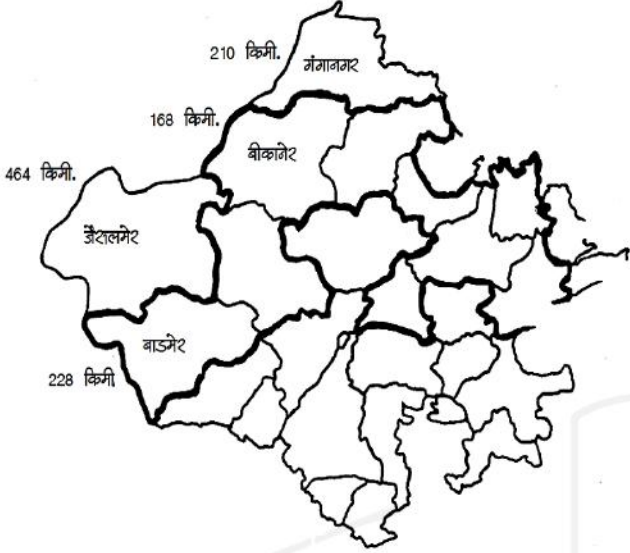
(4) चित्तौड़गढ़:- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है व विच्छिन्न है ।

(5) भीलवाड़ा:- चित्तौड़गढ़ को 2 भागों में विच्छिन्न करता है ।



अन्तर्राज्यीय सीमा पर

- सर्वाधिक सीमा
झालावाड (560 किमी.)
(M.P.)
- सबसे कम
बाडमेर (14 किमी.)
(गुजरात)



- 25 जिले : राजस्थान के सीमावर्ती जिले
- 23 जिले : अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती
- 4 जिले : अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती
- 2 जिले : अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती (श्रीगंगानगर + बाडमेर)
- 8 जिले : राजस्थान के वे जिले जो अन्तः स्थलीय (Land locked) सीमा बनाते हैं ।

पाली सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है । जो निम्न हैं -
बाडमेर, जोधपुर, जालौर, शिरोही, उदयपुर, राजसमन्द, झुजमेर, नागौर ।

झुजमेर :- चित्तौड़गढ़ के बाद राजस्थान का दूसरा विखण्डित जिला

राजसमन्द :- राजसमन्द झुजमेर को दो भागों में विखण्डित करता है ।

इसका जिला मुख्यालय इसके नाम से नहीं है ।

राजनगर राजसमन्द का जिला मुख्यालय है ।

नागौर :- नागौर सर्वाधिक संभाग मुख्यालयों के साथ सीमा बनाता है ।

(जयपुर, झुजमेर, जोधपुर, बीकानेर)

सीमावर्ती विवाद

मानगढ हिल्स विवाद

स्थिति = बाँसवाडा

विवाद = राजस्थान-गुजरात के मध्य

1. पाकिस्तान का बहावलपुर का सर्वाधिक सीमा गंगानगर के साथ बनाता है ।
2. न्यूनतम सीमा बाडमेर के साथ बनाता है ।
3. पाकिस्तान के 9 जिले भारत के साथ सीमा बनाते हैं ।
4. पाकिस्तान के 6 जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं ।
5. भारत के 4 जिले पाकिस्तान के साथ सीमा बनाते हैं ।
6. जैसलमेर सर्वाधिक सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
7. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
8. अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा नाम - सर शिरिल रेड रेडक्लिफ रेखा
निर्धारण तिथि - 17 अगस्त 1947
शुरुआत - हिन्दूमलकोट
अंत - शाहगढ (बाडमेर)
9. राजस्थान की कुल सीमा का 18% (1070 किमी.) है ।
10. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
11. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटतम जिला मुख्यालय है ।
12. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
13. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
14. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।

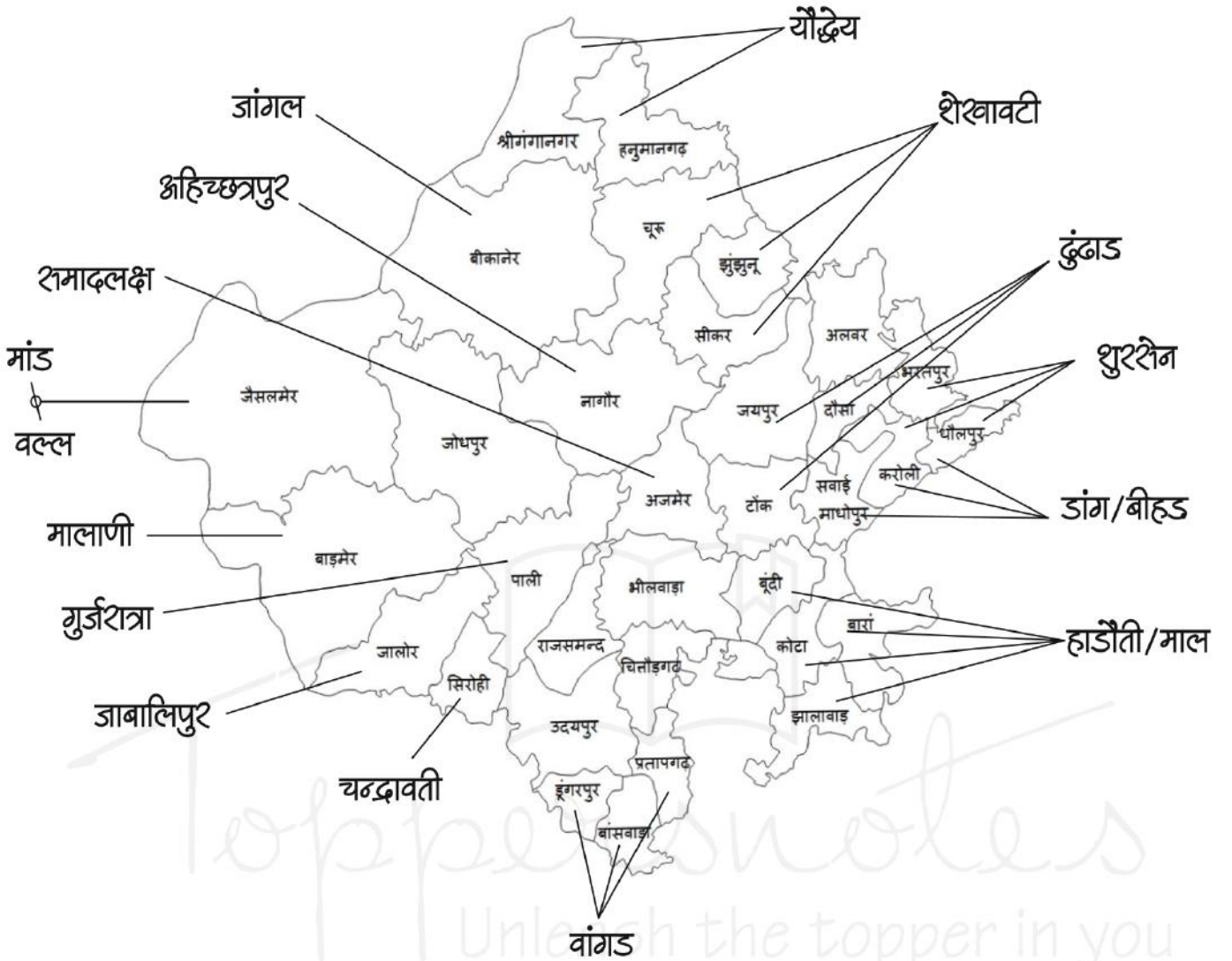


नवीनतम जिले

- 26 ऊजमेर (1 नवम्बर, 1956)
- 27 धौलपुर (15 अप्रैल, 1982)
- 28 बारं (10 अप्रैल 1991)
- 29 दौसा (10 अप्रैल 1991)
- 30 राजसमंद (10 अप्रैल 1991)
- 31 हनुमानगढ (12 जुलाई 1994)
- 32 करौली (19 जुलाई 1997)
- 33 प्रतापगढ (26 जनवरी 2008)

राजस्थान के प्रादेशिक के परिवर्तन का स्वरूप एवं वर्तमान नाम

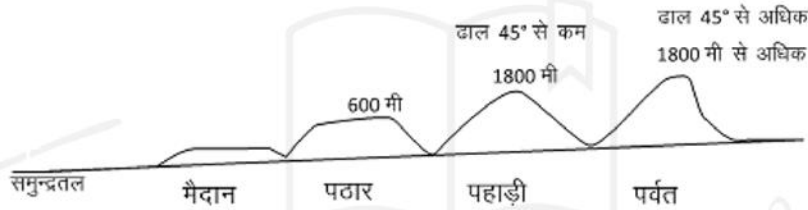
प्राचीन नाम	बदला स्वरूप	वर्तमान नाम
योद्धेय	जोहयावाटी	गंगानगर
जांगल	भटनेर	बीकानेर
अहिच्छत्रपुर	अहिपुर	नागौर
गुर्जर	गुरजानना	मण्डोर-जोधपुर
शाकंभरी शांभर	अजयमेरु	अजमेर
श्रीमाल स्वर्णगिरि	मेलोर भीममाल	बाडमेर
वल्ल	दुंगल	जैसलमेर
अर्बुद	चन्द्रावती	शिरौही
विशट	रामगढ	जयपुर
शिवि	चित्तौड	उदयपुर
कांठल	देवलिया	प्रतापगढ
पालन	दशपुर	झालावाड
व्याघ्रवाट	वांगड	बांसवाडा
जानालीपुर	स्वर्णगिरि	जालौर
कुरु		भरतपुर, करौली
शौरसेन		धौलपुर
हयाहय		कोटा, बुंदी
चंद्रावती		अबू, शिरौही
छप्पन मैदान		प्रतापगढ, बांसवाडा के छप्पन ग्राम समूह
मेवल		डूंगरपुर, बांसवाडा के बीच का भाग
दूंगड		जयपुर
थली		युरू, शरदर शहर
हाडौती		कोटा, बुंदी, झालावाड
शेखावटी		युरू, शीकर, झुंझुनू



राजस्थान का भौगोलिक प्रदेश

1. राजस्थान के भौगोलिक प्रदेश को सर्वप्रथम निर्धारण करने का श्रेय –“प्रो. वी. सी. मिश्रा” को दिया जाता है (उच्चावच के आधार पर)। यह निर्धारण अपनी पुस्तक “राजस्थान का भूगोल” मे 1968 ई. में किया था। इन्होंने राजस्थान को 7 भौतिक प्रदेशों में बाँटा था—
 - i. नहरी क्षेत्र – गंगानगर, हनुमानगढ़
 - ii. पश्चिमी मरुस्थल/शुष्क मरुस्थल – बीकानेर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर
 - iii. अर्द्धशुष्क मरुस्थल – चूरू, सीकर, झुँझुनूँ, पाली, जालौर आदि।
 - iv. अरावली प्रदेश – राजसमंद, सिरोही, उदयपुर
 - v. द. पू. औद्योगिक क्षेत्र – कोटा-बून्दी-बारों, झालावाड़, चित्तौड़गढ़-बाँसवाडा आदि।
 - vi. पूर्वी कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र
 - vii. चम्बल बीहड़ क्षेत्र।

उच्चावच – ये धरातल पर पायी जाने वाली धरातलीय आकृतियाँ होती है, जो निम्न हैं—



नोट— सम्पूर्ण भारत मे धरातल के विभिन्न भागों की ऊँचाई नापने के लिए – चेन्नई तट का उपयोग किया जाता है।

2. राजस्थान का दूसरी बार जलवायु के आधार पर निर्धारण— एस.के. सेन ने 1968 ई. में किया जिसमें इन्होंने राजस्थान को तीन भागों में बाँटा था।
3. राजस्थान का तीसरी बार भौतिक प्रदेशों के रूप में विभाजन 1971 ई. में रामलोचन सिंह द्वारा किया, जो निम्न है –
 - A. सबसे पहले राज. को दो भागों मे बाँटा— राजस्थान मैदानी, राजस्थान पहाड़ी भाग
 - B. आगे इनको 4 उप विभागों मे बाँटा, पुनः इनको 12 उप विभागों मे बाँटा

महत्वपूर्ण

2 मुख्य भाग
↓
4 उप विभाग
↓
12 लघु भाग

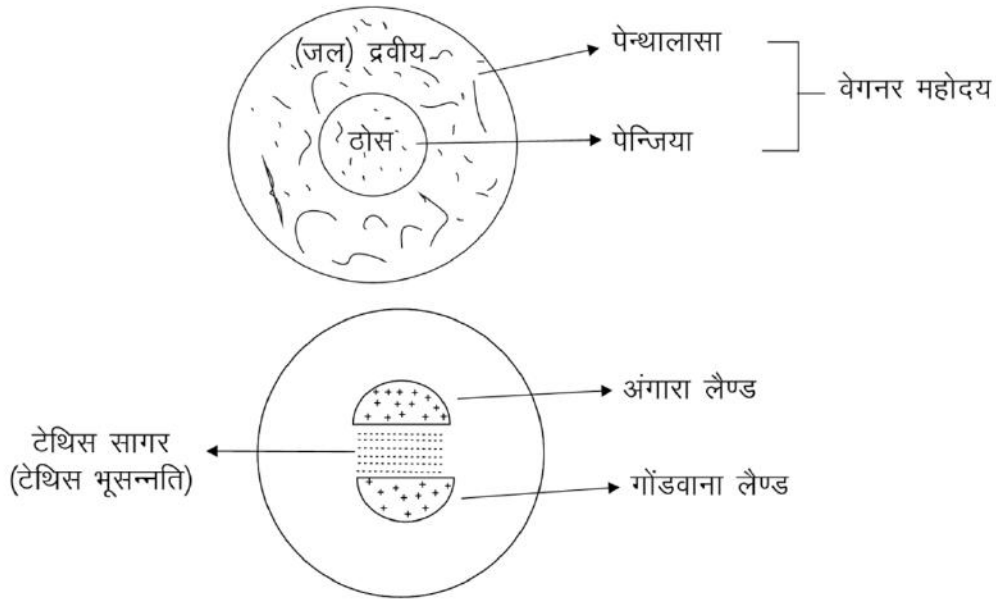
वर्तमान वर्गीकरण

प्रो. ए.के. तिवारी व डॉ. एच. एम. सक्सेना ने 1994 में पुस्तक 'राजस्थान का प्रादेशिक भूगोल' में इसका वर्णन किया। इन्होंने राजस्थान को 4 भौतिक प्रदेशों में बाँटा है—

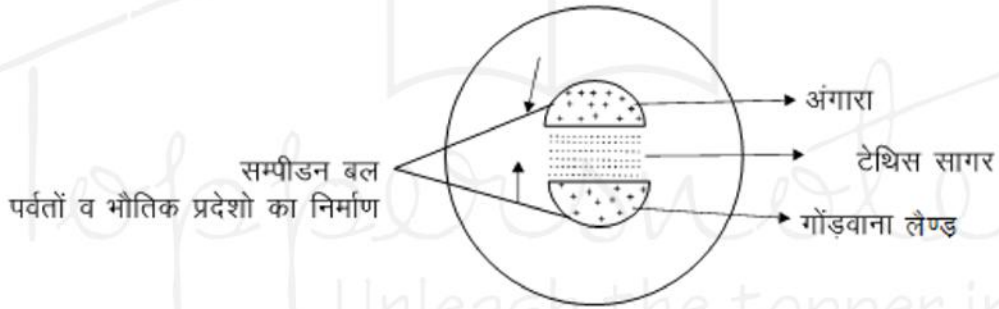
1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
2. अरावली पर्वतमाला
3. पूर्वी मैदान भाग
4. दक्षिण पूर्वी पठारी भाग

राजस्थान के भू-आकृतिक स्वरूप बहुत प्राचीन है और लम्बे समय की अपरदन एवं निक्षेपण प्रक्रियाओं से बने है।

भौतिक प्रदेशों का निर्माण



- पेंजिया का विभाजन – चंद्रमा के गुरुत्व बल से हुआ है।
- यह विभाजन कार्बोनिफेरस युग में हुआ था।
- टेथिस सागर पेंजिया का ही अवशेष है।



भारत का हिस्सा

राजस्थान

1. पश्चिमी मरुस्थल – थार मरुस्थल
2. पूर्वी मैदान – उत्तर का मैदान
3. अरावली पर्वतमाला – प्रायद्वीपीय पठार
4. द. पू. पठार – प्रायद्वीपीय पठार

भौतिक प्रदेशों का निर्माण के आधार पर क्रम –

1. अरावली पर्वतमाला
2. दक्षिण पूर्वी पठार
3. पूर्वी मैदानी भाग
4. पश्चिमी मरुस्थल प्रदेश



भौतिक प्रदेश का निर्माण काल

1. अरावली पर्वतमाला – आद्यमहाकल्प – प्रिकैम्ब्रियन युग – Paleozoic Era
2. द. पू. पठार – मध्यजीवी महाकल्प – क्रिटिशियस युग – Mesozoic Era
3. पूर्वी मैदान – नवजीवी महाकल्प – प्लिस्टोसीन युग – Cenozoic Era
4. उ. प. मरुस्थल – नवजीवी महाकल्प – प्लिस्टोसीन युग – Cenozoic Era

नोट : पृथ्वी की उत्पत्ति प्रिकैम्ब्रियन युग में हुई।

Time Table of Earth

- आद्य महाकल्प – Paleozoic Era
- मध्य महाकल्प – Mesozoic Era
- नवजीवी महाकल्प – Cenozoic Era

राज्य के भौतिक प्रदेश	उत्पत्ति/अंग
थार मरुस्थल	टेथिस सागर
अरावली पर्वतमाला	गोंडवाणा लैंड
पूर्वी मैदानी भाग	टेथिस सागर
दक्षिण-पूर्वी पठार	गोंडवाणा लैंड

- मरुस्थल प्रदेश – अवसादी चट्टाने प्राप्त होती हैं – जैविक अवशेष – अधात्विक खनिज
- अरावली पर्वतमाला – आग्नेय चट्टान (ग्रेनाइट) – धात्विक खनिज
- पूर्वी मैदानी भाग – चट्टानों का अभाव – खनिजों का अभाव
- द.पू. पठार – आग्नेय चट्टाने (बेसाल्ट) – धात्विक खनिज

राजस्थान की प्री-कैम्ब्रियन चट्टानों का आधारभूत वर्णन ए.एम. हेरोन ने प्रस्तुत किया।

पश्चिमी मरुस्थल प्रदेश

यह टेथिस सागर का अवशेष है।

- प्रमाण
1. खारे पानी की झीलों का होना।
 2. पेट्रोलियम पदार्थों का मिलना।
 3. कोयले का जमाव मिलना।
 4. समुद्री वनस्पति का होना।

हिस्सा

विश्व के सापेक्ष – अफ्रीका महाद्वीप के सहारा मरुस्थल का भाग है।

यह ग्रेटपोलियो आर्कटिक का भाग है।

→ सहारा मरु. + अरब मरु. + थार मरु.

भारत के सापेक्ष – पश्चिमी मरुस्थल प्रदेश – थार मरुस्थल का भाग है।

थार मरुस्थल को पाकिस्तान में 'चेलिस्तान' कहते हैं।

थार मरुस्थल का विस्तार भारत के 4 राज्यों में हैं –

सर्वाधिक – राजस्थान (1st), गुजरात (2nd), हरियाणा (3rd), पंजाब (4th)

क्षेत्रफल – राज. के 61.11% (209543.25 वर्ग किमी.) – क्षेत्रफल पर स्थित है जहाँ पर 39% जनसंख्या निवास करती है।

विस्तार – कुल 12 जिले आते हैं।

- | | | | | | |
|--------------|------------|------------|-----------|----------|--------------|
| 1. गंगानगर | 3. बीकानेर | 5. बाड़मेर | 7. जोधपुर | 9. चूरु | 11. झुंझुनूँ |
| 2. हनुमानगढ़ | 4. जैसलमेर | 6. जालौर | 8. पाली | 10. सीकर | 12. नागौर |

नोट—

- राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 61% भाग (20,9000 वर्ग किमी क्षेत्र) मुख्य भूमि 1,75000 वर्ग किमी है (कुल 52% भाग पर)
- पश्चिम मरुस्थल थार के मरुस्थल के 62% भाग पर आता है।
- भारत के मरुस्थलीकरण एवं भूअवनयन एटलस के आधार पर राजस्थान मरुस्थलीकरण 67% भाग पर है। **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**

विस्तार

उत्तर-पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक विस्तार – 640 किमी

उत्तर-पूर्व से दक्षिण पूर्व तक विस्तार – 300 किमी

ढाल – उत्तर-पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर है।

जनसंख्या – राजस्थान की लगभग 40% जनसंख्या यहाँ पायी जाती हैं।

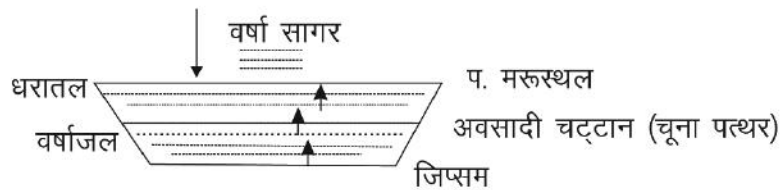
यह मरुस्थल विश्व में सर्वाधिक जनघनत्व एवं जैव विविधता वाला मरुस्थल है।

पश्चिमी मरुस्थल को Dr. ईश्वर प्रसाद ने 'रुक्ष प्रदेश' कहा था।

मिट्टी – रेतीली/बालू मिट्टी/ ऐरीडोसोल

उत्पादन क्षमता – कम है – नाइट्रोजन का अभाव व ह्यूमस का अभाव

जल ग्रहण क्षमता – कम (बड़े कण वाली मिट्टी)



2006 में कवास-बाड़मेर में बाढ़ आयी थी। इसका कारण— भू गर्भ में जिप्सम का जमाव होना था।

वर्षा – 20 से 50 cm वर्षा होती है।

प. मरुस्थल के पश्चिमी सीमा यानी समगाँव – जैसलमेर मे 0 cm. वर्षा होती है। राजस्थान का वनस्पति विहीन क्षेत्र सम गाँव, जैसलमेर है व थार मरुस्थल की पूर्वी सीमा पर 50 सेमी वर्षा होती है।

अर्थव्यवस्था

1. पशुपालन
2. कृषि (खरीफ – ग्वार, मोठ, मूँग, ज्वार, उड़द, बाजरा, तिल, मूँगफली)
 - यहाँ पर चक्रीय कृषि की जाती है।
 - मरुस्थल में भूमि की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए बोई जाने वाली फसल
 - मूँग → मोठ → उड़द – जड़ों में राइजोबियम जीवाणु → नाइट्रोजन क्षमता बढ़ाता है।

वनस्पति

मरुद्भिद वनस्पति / कांटेदार वनस्पति / झाडीनुमा वनस्पति पायी जाती है।

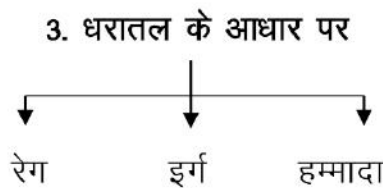
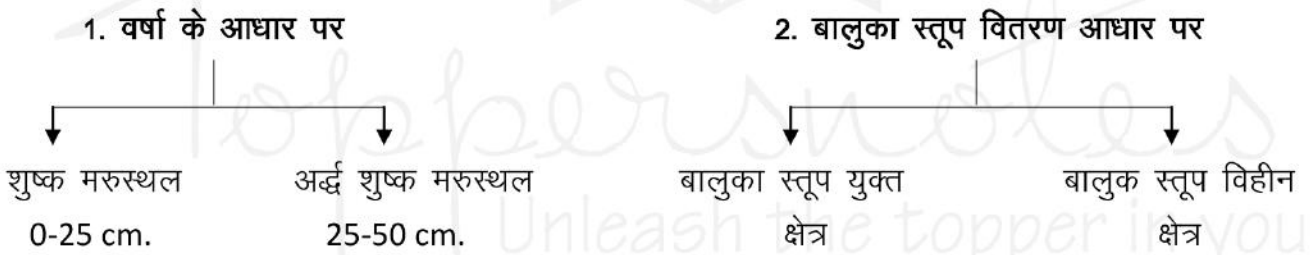
इन्हें जिरोफाइड्स भी कहते हैं।

अपरदन – सबसे अधिक वायु द्वारा होता है। इसका कारण – रेतीली मिट्टी है।

नहर – इंदिरा गाँधी नहर परियोजना (IG NP)

वर्तमान में इस नहर का प्रभाव

1. यहाँ पर वर्तमान में रबी फसल व व्यापारिक फसल का उत्पादन होता है।
2. सेम की समस्या उत्पन्न – राज. में सर्वाधिक – बड़ोपल (हनुमानगढ़ में सेम की समस्या है) पश्चिमी मरुस्थल में धरातल की बनावट, वर्षा, जलवायु समान नहीं होती है अतः इस प्रदेश को तीन प्रकार से विभाजित किया गया है।



वर्षा के आधार पर

शुष्क मरुस्थल (महान मरुस्थल) वर्षा – 0-25 cm – बीकानेर, स्तूप युक्त क्षेत्र पश्चिम सीमा – 0 cm वर्षा–जैसलमेर (स्तूप रहित क्षेत्र) पूर्वी सीमा – 25 cm. वर्षा–बाड़मेर (स्तूप रहित क्षेत्र) राज्य में रेतीले शुष्क मैदान एवं अर्द्धशुष्क मैदान को 25 सेमी. सम वर्षा रेखा विभाजित करती है।	अर्द्ध शुष्क मरुस्थल वर्षा – 25 से 50 cm. पश्चिमी सीमा – 25 cm. वर्षा पूर्वी सीमा – 50 cm. वर्षा
---	---

Q.1 राजस्थान की वर्षा विभाजन रेखा है ? (First Grade)

1. 50 mm. (1 cm = 10 mm = 50 cm = 500 mm)
2. 150 mm.
3. **500 mm. (Correct Option)**
4. कोई नहीं

Q.2 रेतीले मरुस्थल की पूर्वी सीमा का निर्धारण कौनसी वर्षा रेखा करती है ? (Second Grade)

1. 25 cm.
2. **40 cm. (Correct Option)**
3. 930 cm.
4. कोई नहीं

नोट – 40 cm व 50 cm, दोनो option सहीं होंगे।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश रेडक्लिफ रेखा एवं 50 सेमी समवर्षा रेखा के बीच स्थित है।

शुष्क मरुस्थल

- वर्षा 0 से 25 cm
- जिले – बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
- उपनाम – महान मरुस्थल – बालु का स्तूप युक्त या रेत के टीले अधिक।
- मिट्टी – रेतीली
- अपरदन – वायु अपरदन
- **मरुस्थल मार्च** – बालुका स्तूप का आगे बढ़ना / रेत के टीलो का आगे बढ़ना या मरुस्थल का आगे बढ़ना।
- **प्रसिद्ध स्थान** – नाचना गाँव – जैसलमेर

बालुका स्तूपों का प्रकार [2nd Grade 1st Paper - 2016]

वनस्पति के आधार पर	आकृति के आधार पर
1. वनस्पति विहीन क्षेत्र वनस्पति विहीन क्षेत्र में पाये जाने वाले बालू रेत के विशाल टीलों को धोरे या धरियन कहते हैं एवं उनके मध्य का रास्ता कारवाँ कहलाता है। 2. वनस्पति युक्त क्षेत्र	1. बरखान बालुका स्तूप/अर्द्धचन्द्राकार बालुका स्तूप 2. अनुदैर्घ्य बालुका स्तूप 3. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप 4. पैराबोलिक बालुका स्तूप 5. स्क्रकाफिज बालुका स्तूप 6. नेब्यखां बालुका स्तूप 7. तारा बालुका स्तूप 8. नेटवर्क बालुका स्तूप 9. धरियन बालुका स्तूप

1. बरखान बालुका स्तूप/अर्द्धचन्द्राकार बालुका स्तूप

- इसकी आकृति – अर्द्धचन्द्राकार होती है।
- ये स्तूप सर्वाधिक गतिशील एवं सर्वाधिक विनाशकारी होते हैं।
- क्षेत्र – जैसलमेर – बाड़मेर – ओसियाँ (जोधपुर) – शेखावाटी क्षेत्र, सूरतगढ़, लुणकरणसर



- ऊँचाई – 20-30 M.
- चौड़ाई – 100-200 मीटर
- राजस्थान में सर्वाधिक बालुका स्तूप बरखान पाये जाते हैं।



2. अनुदैर्घ्य बालुका स्तूप

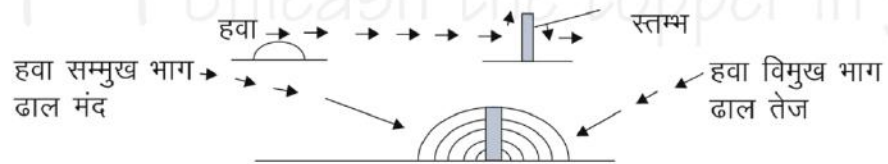
इन स्तूपों के तीन प्रकार होते हैं



- ये स्तूप हवा के समान्तर बनते हैं।
- क्षेत्र – महान मरुस्थल – सर्वाधिक – बाड़मेर में, जैसलमेर, जोधपुर

3. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप

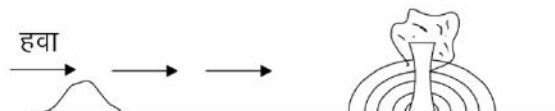
- ये स्तूप हवा के समकोण पर बनते हैं।



- क्षेत्र – जहाँ हवा को रोकने के लिए अवरोध हो—
जैसलमेर – बाड़मेर – जोधपुर, चूरु, झुँझुनूँ (शेखावटी), रावतसर (हनुमानगढ़), बीकानेर, सूरतगढ़ (गंगानगर)

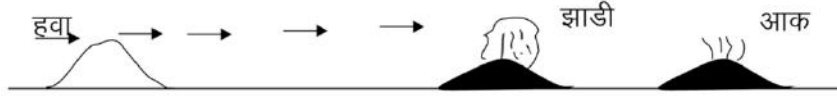
4. पैराबोलिक बालुका स्तूप

- यह पेड़ों के सहारे बनते हैं।
- इसे Hairpin बालुका स्तूप भी कहते हैं।
- क्षेत्र – सम्पूर्ण क्षेत्र राज्य का ।



5. स्क्र-काफिज बालुका स्तूप

- ये स्तूप किसी झाड़ी या आक के सहारे बनते हैं।
- क्षेत्र – सम्पूर्ण राजस्थान



6. नेबखां / नेवछा बालुका स्तूप

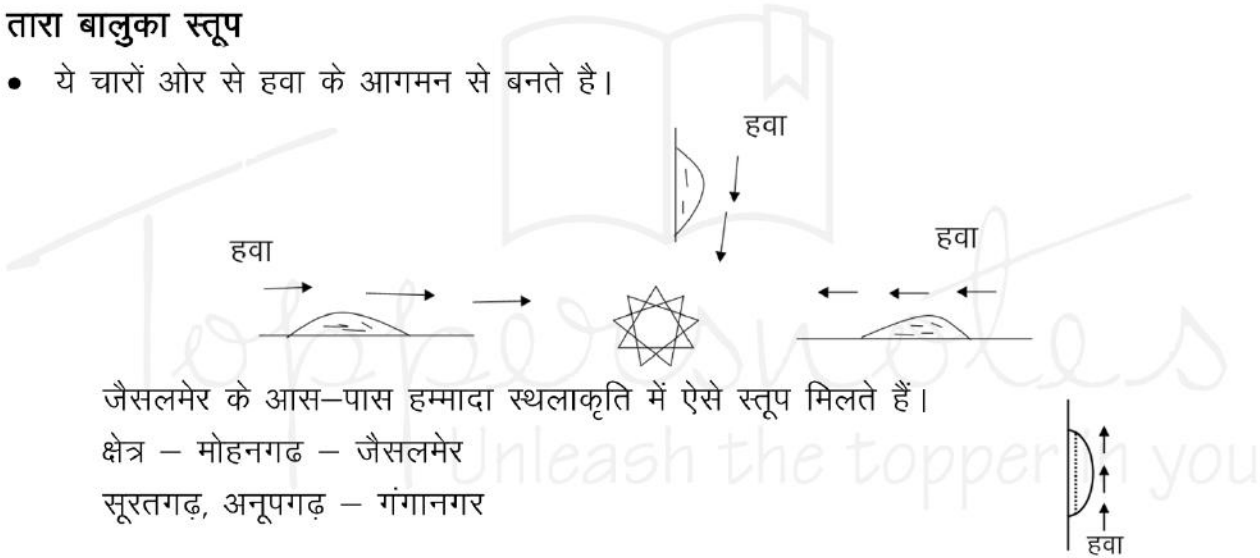
- इन स्तूपों का निर्माण वनस्पति के एक ओर ही होता है।



नोट – नेबखां बालुका स्तूप राज्य में नहीं बनते हैं लेकिन स्क्र-काफिज बालुका स्तूप नेबखां के ही भाग होते हैं।

7. तारा बालुका स्तूप

- ये चारों ओर से हवा के आगमन से बनते हैं।



जैसलमेर के आस-पास हम्मादा स्थलाकृति में ऐसे स्तूप मिलते हैं।

क्षेत्र – मोहनगढ़ – जैसलमेर

सूरतगढ़, अनूपगढ़ – गंगानगर

8. नेटवर्क बालुका स्तूप

- मरुस्थल के उत्तर-पूर्वी भाग में पाए जाते हैं।
- क्षेत्र – हनुमानगढ़ से सिरसा हिसार (हरियाणा) में बालुका स्तूप एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं।



9. धरियन बालुका स्तूप

- प्रत्येक बालुका स्तूप के ऊपर मिट्टी का लहर दार जमाव ही धरियन कहलाता है।

जल के स्रोत

आगोर – मरुस्थलीय क्षेत्रों में घरों के आंगन में बनी पानी की टंकी होती है।

नाड़ी – छोटी नालियाँ/खेल (पशुओं के जल के लिए)

टोबा – बड़ी खेल/बड़ी नाली (पशुओं के जल के लिए)

टांका – घर में पानी के लिए टंकी

कुण्ड – वर्षा जल संग्रहण हेतु

बेरी – छोटे कुए को बेरी कहते हैं।

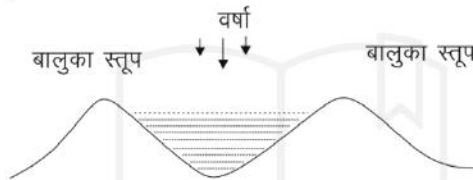
खड़ीन – खेत में ढाल के विपरीत पाल बनाकर पानी एकत्रित करना खड़ीन कहलाता है।

खड़ीन जैसलमेर में पायी जाती है तथा यह पालीवाल ब्रह्मणों द्वारा निर्मित है।

इन्हे प्लाया भी कहते हैं।

झील – इसे सर/टाड/रन/प्लाया झील भी कहते हैं।

↓ ↓
 प्राकृतिक कृत्रिम



- ये झीलें बालुका स्तूपों के मध्य वर्षा जल से निर्मित होती है।
- ये झीलें अस्थायी व दलदली होती है।
- ये झीले खारे पानी की होती है। सर्वाधिक – जैसलमेर
- शुष्क मरुस्थल प्रदेश में बालुका स्तूपों के बीच में कहीं-कहीं निम्न भूमि मिलती है, जिसमें वर्षा का जल भर जाने से अस्थायी झीलों का निर्माण होता है इन्हें 'रन' कहते हैं।

उदाहरण – प्रमुख रन निम्न हैं –

जोधपुर – बाप व लावा झील

बाडमेर – थोब झील

जैसलमेर – कनोड, पोकरण, भाकरी झील, बरमसर झील, लवा

चुरु – तालछापर, परिहारा या रणक्षेत्र झील

जयपुर – सांभर झील

नोट – परमाणु परीक्षण स्थल – पोकरण

↓	↓
<p>I चरण</p> <p>18 मई, 1974</p> <p>नाम – स्माईलिंग बुद्धा</p> <p>प्रधानमंत्री – इंदिरा गाँधी</p>	<p>II चरण</p> <p>(a) 11 मई, 1998</p> <p>(b) 13 मई, 1998</p> <p>नाम – ऑपरेशन शक्ति</p> <p>प्रधानमंत्री – अटल बिहारी वाजपेयी</p>